खण्ड – 2 : प्रमुख विचारक – 1

इकाई – 2 : लोंजाइनस

इकाई की रूपरेखा

2.2.0. उद्देश्य कथन
2.2.1. प्रस्तावना
2.2.2. लोंजाइनस : व्यक्ति परिचय
    2.2.2.1. व्यक्तित्व
    2.2.2.2. कृतियाँ
2.2.3. लोंजाइनस का उदात्त सिद्धान्त
    2.2.3.1. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र और लोंजाइनस
    2.2.3.2. उदात्त का स्वरूप विवेचन
    2.2.3.3. उदात्त का मूल आधार व स्रोत
    2.2.3.4. उदात्त के बाधक तत्त्व
2.2.4. 'उदात्त सिद्धान्त' की उपादेयता
    2.2.4.1. उदात्त और भारतीय काव्य चिन्तन
    2.2.4.2. उदात्त सिद्धान्त का अवदान
2.2.5. सारांश
2.2.6. शब्दावली
2.2.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची
2.2.8. सम्बन्धित प्रश्न

2.2.0. उद्देश्य कथन

प्रमुख विचारक-1 खण्ड की दूसरी इकाई 'लोंजाइनस' आपके समक्ष प्रस्तुत है। पहली इकाई में आपने अरस्तू के काव्य सिद्धान्त के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया। अब आप इस इकाई में लोंजाइनस के काव्य चिन्तन का अध्ययन करेंगे। विदित है कि लोंजाइनस यूनान के तीसरी शती के महान् दार्शनिक थे। उन्होंने पूर्ववर्ती परम्पराओं का अनुशीलन कर साहित्यशास्त्र के भावी विकास का मार्ग प्रशस्त किया। साहित्य चिन्तन की पाश्चात्य परम्परा में प्लेटो के लिए काव्य जहाँ 'उत्तेजक' था, वहीं अरस्तू के लिए काव्य का स्वरूप 'विरेचक' था, लेकिन लोंजाइनस ने साहित्य के 'उदात्त' स्वरूप का विवेचन किया। प्रस्तुत इकाई लोंजाइनस के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

2.2.0.1. पाश्चात्य काव्य चिन्तन के विकासक्रम में लोंजाइनस की उल्लेखनीय भूमिका का विवेचन कर सकेंगे।

2.2.0.2. उदात्त की अवधारणा व उसमें निहित विचारसूत्रों की व्याख्या कर सकेंगे।

2.2.0.3. भारतीय काव्य चिन्तन में 'उदात्त' की अवधारणा का लोंजाइनस के काव्य चिन्तन से तुलनात्मक अध्ययन करते हुए साम्य-वैषम्य से परिचित हो सकेंगे।

2.2.1. प्रस्तावना

नैतिक मूल्यों का क्षरण आज जिस तीव्रता से हो रहा है तथा सामाजिक व मानवीय मूल्यों का जो विघटन समाज में दिखाई दे रहा है, उसके विषाक्त प्रभाव को कम करने के लिए लोंजाइनस के काव्य चिन्तन की आवश्यकता निरन्तर महसूस की जा रही है। वैसे तो पाश्चात्य काव्यशास्त्र की विकास परम्परा में आरम्भ से ही यूनान की केंद्रीय भूमिका रही है। इस आलोक में प्लेटो और अरस्तू के बाद लोंजाइनस ने साहित्य चिन्तन में अभूतपूर्व योगदान दिया है। उल्लेखनीय है कि काव्यशास्त्रीय चिन्तन परम्परा में उन्होंने अपने पूर्ववर्ती विचारों का गहन अनुशीलन करते हुए भावी स्थापनाओं के विकास का उदात्त मार्ग प्रशस्त किया है। प्लेटो ने काव्य को उत्तेजक माना है, जबकि अरस्तू के लिए काव्य का स्वरूप विरेचक है। लेकिन लोंजाइनस ने काव्य को 'उदात्त' माना है और उनकी यह धारणा स्वतंत्र कला चिन्तन की दृष्टि से अत्यन्त विशिष्ट है। कालान्तर में लोंजाइनस की धारणा में निहित संकल्पनाओं की सम्भावनाओं को विविध आयामों से जोड़कर देखा गया।

2.2.2. लोंजाइनस : व्यक्ति परिचय

वस्तुतः जो रचनाकार या विचारक अपने सम्पूर्ण रचनाकर्म और जीवन मर्म के स्तर पर चिन्तन एवं व्यवहार में पूरी तरह उद्घाटित विवेचित हो जाता है या उसके पैने किनारे भोंथरे या अर्थहीन पक्षों से ढँक दिए जाते हैं, वह रचनाकार प्रेरणाहीन होकर इतिहास की वस्तु बन जाता है। वस्तुतः रचनाकार की असल मृत्यु उसकी दैहिक मृत्यु नहीं, अपितु उसकी वैचारिक चिन्तन या रचनात्मकता की मृत्यु होती है। इस कसौटी पर पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिन्तन में लोंजाइनस का व्यक्तित्व समकालीन सन्दर्भ में अदेह होने पर भी विचार, अनुभूति और साहित्यिक समझ को बनाए रखने के लिए बेहद प्रासंगिक है।

2.2.2.1. व्यक्तित्व

पाश्चात्य साहित्यशास्त्रीय चिन्तन परम्परा में लोंजाइनस के काल को लेकर विवाद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि लोंजाइनस शास्त्रवाद से प्रभावित तीसरी सदी में पालमीरा की महारानी जेनोविया के अत्यन्त विश्वसनीय यूनानी मंत्री थे जिन्हें बाद में महारानी के लिए मृत्यु को वरण करना पड़ा। प्रो॰ रीज रोबर्ट्स ने 'पेरिइप्सुस' नामक रचना के आधार पर लोंजाइनस को पहली सदी का सवीकार करते हैं। हिन्दी साहित्य की प्रो॰ निर्मला जैन भी 'उदात्त के विषय में' नामक अपनी अनुवाद कृति में लोंजाइनस को ईसा की पहली शती का स्वीकार करती हैं। स्कॉट जेम्स जैसे टिप्पणीकार ने लोंजाइनस को प्रथम स्वच्छंदतावादी आलोचक स्वीकार करते हुए नव प्लेटोवादी चिन्तनधारा के प्रवर्तक प्लूटिनस से आठ वर्ष छोटा बताया है। वैसे लोंजाइनस के व्यक्तित्व पर इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वे पहली सदी के थे या तीसरी सदी के। फिर भी यह निर्विवाद है कि लोंजाइनस साम्राज्य काल के लेखक थे। लेकिन कालान्तर में हुए शोधपरक तथ्यों के आधार पर यह मत अधिक

तर्कसंगत माना जा सकता है कि तीसरी सदी में वस्तुतः दो लोंजाइनस हुए हैं जिसमें एक केसियस लोंजाइनस मंत्री था और दूसरा द्विओनीसिउस लोंजाइनस प्रखर चिन्तक था।

2.2.2.2. कृतियाँ

द्विओनीसिउस लोंजाइनस यूनान के तीसरी शती के सुप्रसिद्ध विचारक थे। उनकी एक महत्त्वपूर्ण कृति उपलब्ध है – 'On the Sublime'। रॉबर्टेलो द्वारा इस रचना के अस्तित्व की खोज 1554 ई. में हुई। इसका पहला अंग्रेजी अनुवाद 1662 ई. में जॉन हॉल ने किया। जॉन पैल्टेंसी ने वर्ष 1680 ई. में इसका दूसरा अनुवाद किया। 1774 ई. में बोइलो ने इसका फ्रांसीसी अनुवाद 'सब्लाइम' किया। एक लम्बे अन्तराल के बाद 1899 ई. में रीज़ रॉबर्टस ने तथ्यपरक अनुसंधान सहित अनुवाद 'लोंजाइनस ऑन द सब्लाइम' प्रस्तुत किया जो अधिक मान्य हुआ। ज्ञातव्य है कि डॉ॰ नगेन्द्र और नेमिचंद जैन द्वारा प्रस्तुत इसका पहला हिंदी अनुवाद 'काव्य में उदात्त तत्त्व' उसी पर आधारित है।

2.2.3. लोंजाइनस का उदात्त सिद्धान्त

लोंजाइनस के अनुसार काव्य में उदात्त शैली का होना अति आवश्यक है। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती विचारकों के उन मतों का खण्डन किया है कि काव्य का उद्देश्य पाठक को केवल आनन्द प्रदान करना, शिक्षा देना और अपनी बात मनवाना है। इस सन्दर्भ में लोंजाइनस ने यह मत स्थापित करने का प्रयास किया है कि काव्य का लक्ष्य पाठक को चरम उल्लास प्रदान करना है।

2.2.3.1. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र और लोंजाइनस

लोंजाइनस ने अपने पूर्ववर्ती मान्यताओं की जड़ता को तोड़कर समन्वित दृष्टिकोण अपनाया है। उल्लेखनीय है कि लोंजाइनस से पहले पश्चिम में काव्यशास्त्रीय चिन्तन की एक समृद्ध एवं परिपक्व परम्परा लगभग विकसित हो चुकी थी। उदाहरण के लिए प्लेटो ने जहाँ 'दैवी विक्षेप' में काव्य सृजन की अभिप्रेरणा महसूस की है, वहीं लोंजाइनस ने काव्य सृजन की प्रक्रिया में 'दैवी' तत्त्व और 'विक्षेप' तत्त्व को निकालकर कवि की प्रेरणा का सम्बन्ध सामाजिक सरोकार से जोड़ा है। अरस्तू के 'अतीत की कला' की बजाय लोंजाइनस ने अतीत को आदर्श नहीं माना है, बल्कि उसे समसामयिक चेतना से मूल्यांकित किया है, उससे अभिप्रेरणा ली है तथा विघटनकारी तत्त्वों की प्रखर आलोचना की है। इतना ही नहीं, साहित्य सृजन में प्रगतिशील तत्त्वों का संयोजन कर उन्होंने काव्य के उदात्त स्वरूप को स्थापित करने का सफल प्रयास किया है।

वस्तुतः लोंजाइनस अभिव्यक्ति कौशल व काव्य सम्प्रेषणीयता के आलोक में अरस्तू से लेकर देमेत्रिअस द्वारा स्थापित 'भाषण कला' जैसी तकनीकी विशेषज्ञता का निषेध करते हैं। इस सन्दर्भ में उदात्त (काव्य) के सर्वव्यापी प्रभाव संख्या में अनेक पक्षों और प्रवृत्तियों का सामंजस्य स्थापित करते हुए उन्होंने भाषा के वैशिष्ट्य और चरमोत्कर्ष को अभिव्यक्ति के केन्द्र में स्थापित करते हैं। इस प्रकार लोंजाइनस एक मायने में अभिव्यक्ति के

किसी भी माध्यम को उदात्त की परिधि से बाहर नहीं मानते। इस आलोक में उनके विषय का व्यापकता एवं उपयोगिता सहज ही अनुभूत है, जैसा कि प्रो॰ निर्मला जैन ने कहा है कि "उसमें गद्य-पद्य, इतिहास, दर्शन, धर्म ग्रन्थ, भाषण सभी आ जाते हैं"। लोंजाइनस 'विधाओं और विधाओं का अन्तर' पहचानते थे लेकिन उनका कृत्रिम विभाजन अस्वीकार करते थे, शुद्ध साहित्य की जड़ता से अलग उनमें दृष्टि की एक ऐसी समग्रता थी जो प्राचीन ग्रीक-रोमन साहित्यशास्त्र में ही नहीं, बल्कि आज भी दुर्लभ है।

2.2.3.2. उदात्त का स्वरूप विवेचन

लोंजाइनस के अनुसार उदात्त एक 'भाव' भी है, एक 'विचार' भी है और 'शैली' का एक गुण भी है। कहना सही होगा कि उसकी सत्ता काव्य रचना के वस्तु पक्ष और कला पक्ष दोनों तक व्याप्त है। लोंजाइनस ने काव्य में उदात्त के स्वरूप पर विचार करते हुए जिन मूल तथ्यों को स्थापित किया है, उनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है –

(i) उदात्त अभिव्यक्ति की उच्चता एवं उत्कृष्टता का नाम है।

(ii) अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता श्रोता के तर्क का मात्र समाधान प्रस्तुत नहीं करती, अपितु उसे अभिभूत कर लेती है।

(iii) काव्य का उदात्त तत्त्व अपनी प्रबल शक्ति के द्वारा पाठक को अनायास अपनी तीव्रता में बहा ले जाता है।

(iv) किसी रचना का शिल्प उसके एक-दो अंश से नहीं, बल्कि सम्पूर्ण रचना के शिल्प विधान के आलोक में धीरे-धीरे आता है, लेकिन रचना में उदात्त विचार यदि सन्दर्भ व अवसर के अनुकूल हो तो एकाएक बिजली की तरह चमककर पूरी विषयवस्तु को प्रकाशित कर देता है। साथ-ही-साथ वक्ता के समस्त वाग्वैभव को एक पल में अभिव्यक्त कर देता है।

आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य में लोंजाइनस के विचारों में परस्पर विरोध परिलक्षित होते हैं। उदाहरण के तौर पर उदात्त को एक स्थान पर 'शैली' का गुण माना गया है तो दूसरे स्थान पर उसे भावावेग स्वीकार किया गया है, जबकि तीसरे स्थान पर उसे चामत्कारिक विचार बताया गया है। वस्तुत: ये तीनों विचार एक दूसरे के पूरक हैं। जैसा कि लोंजाइनस ने कहा है कि काव्य का उदात्त स्वरूप अपने समन्वित रूप में प्रकट होकर श्रोता या पाठक की आत्मा को झंकृत कर उसे चमत्कृत करता हुआ 'आनन्द' प्रदान करता है।

2.2.3.3. उदात्त का मूल आधार व स्रोत

उदात्त के मूल आधार पर विचार करते हुए सुविख्यात विचारक लोंजाइनस ने प्रतिभा को उदात्त की मूल प्रेरक शक्ति माना है। उनके अनुसार नियमों के ज्ञान और अभ्यास के द्वारा प्रतिभा ज्ञान को उदात्त बनाया जाता है। वस्तुतः काव्य में उदात्त का आधार कोई एक गुण नहीं होता है, अपितु वह कलाकार का सम्पूर्ण व्यक्तित्व होता है।

लोंजाइनस इस बात पर बल देते हैं कि महान् प्रतिभाशाली, उच्च विद्वान एवं चरित्रवान व्यक्ति ही 'उदात्त' रचनाएँ दे सकता है। उनके अनुसार काव्य में औदात्य आत्मा की महानता का प्रतिबिम्ब है। वस्तुतः जिनकी चेतना उदात्त एवं विकासोन्मुख है, सच्चा औदात्य केवल उन्हीं में प्राप्य है। जिनका जीवन तुच्छ एवं संकीर्ण विचारों के अनुसरण में व्यतीत होता है, वे कभी मानवता के लिए कोई स्थायी महत्त्व की रचना प्रस्तुत करने में सफल नहीं होते। उदाहरण के लिए कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति चारित्रिक दृष्टि से कमजोर हो सकता है, उसकी व्यवहार क्षुद्र व अपरिष्कृत हो सकता है, ऐसी स्थिति में उससे 'औदात्य' की आशा नहीं की जा सकती है। ठीक उसी प्रकार कोई विद्वान शास्त्रज्ञाता होते हुए अहंकारी एवं दम्भी हो सकता है, अत: वह भी उदात्त रचना प्रस्तुत नहीं कर सकता।

वस्तुत: लोंजाइनस का उदात्त सम्बन्धी विचार साहित्यशास्त्रीय चिन्तन परम्परा में उन्हें विशिष्ट स्थान का पात्र बना देता है। कहना गलत न होगा कि उनसे पहले किसी भी विचारक ने काव्य या साहित्य का उसके रचयिता के व्यक्तित्व से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित नहीं किया था। उन्होंने अपने काव्यशास्त्रीय विवेचन के निहितार्थ पाँच ऐसे स्रोतों का उल्लेख किया है जो किसी रचना में औदात्य का संचार करते हैं। इस आलोक में औदात्य के महत्त्वपूर्ण पाँच स्रोतों (उदात्त विचार, उदात्त चित्रण, अलंकार नियोजन, उत्कृष्ट भाषा तथा गरिमामय रचना विधान) का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है –

1. उदात्त विचार का सम्बन्ध उदात्त व्यक्तित्व से है। लोंजाइनस के अनुसार औदात्य आत्मा की महानता का प्रतिबिम्ब है। महान् व्यक्तियों की वाणी से ही उदात्त विचार ध्वनित होते हैं। लेखक का व्यक्तित्व जितना अधिक उदात्त होगा उसकी रचना में भी उसी अनुपात में औदात्य दिखाई देगा। कवि को उन महापुरुषों के साथ तादात्म्य स्थापित करना पड़ता है जिनका चित्रण वह अपनी कविता में करता है। हालाँकि, यह तादात्म्य कवि तभी कर पाता है जब उसका अपना व्यक्तित्व उदात्त गुणों से परिपूर्ण हो। होमर आदि साहित्यकारों की रचनाओं में 'औदात्य' इसीलिए आ सका, क्योंकि स्वयं उनका व्यक्तित्व महान् था।

2. लोंजाइनस से पहले कुछ विचारकों ने भावावेग को औदात्य में बाधक स्वीकार किया था, लेकिन लोंजाइनस ने इस धारणा का खण्डन करते हुए भावावेग को औदात्य का सहायक माना है। क्योंकि, उपयुक्त परिस्थितियों का चयन एवं उनका सम्यक् रूप में संघटन ही भावावेग का जनक है। इतना ही नहीं, भाव प्रस्तुति में बिम्ब विधान से भी सहायता मिलती है।

3. लोंजाइनस काव्य में उदात्त तत्त्व के स्रोतों की व्याख्या करते हुए यह मत प्रकट किया है कि अलंकार के सम्यक् प्रयोग से औदात्य की सिद्धि में सहायता मिलती है। उनके अनुसार अलंकारों का प्रयोग भाषा में इस प्रकार अपेक्षित है कि श्रोता या पाठक को उनके प्रयोग का पता न चले। अभिप्राय यह है कि अलंकार भावावेग की प्रेरणा से सहज, स्वाभाविक एवं अनायास रूप में काव्य में आने चाहिए, तभी वे औदात्य के नियामक होते हैं। जैसा कि लोंजाइनस ने कहा है कि "A figure therefore is effective only when it appears is disguise."। इस सन्दर्भ में लोंजाइनस कलागत औदात्य के अन्तर्गत मिथ्या चमत्कार हेतु अलंकारों के प्रयोग का

निषेध करते हैं। उनकी प्रबल धारणा है कि अलंकारों का प्रयोग केवल प्रसंगानुकूल एवं पाठक कोआनन्द प्रदान करने के लिए ही किया जाना चाहिए जो कि स्वाभाविक है।

4. काव्य में उदात्त तत्त्व की व्याख्या करते हुए लोंजाइनस का विचार है कि उपयुक्त शब्द चयन, प्रभावोत्पादक शब्दावली श्रोता को भावाभिभूत कर लेती है। ऐसी शब्द योजना में भाव प्रवणता, सौदर्य, गरिमा, ओज, शक्ति आदि श्रेष्ठ गुणों का समावेश होना चाहिए। सुन्दर शब्द ही सुन्दर विचार को अभिव्यक्त कर पाते हैं और उस अभिव्यक्ति में गरिमा भी तभी आती है। लोंजाइनस का मानना है कि गरिमामयी भाषा ही काव्यभाषा हो सकती है जो कि सामान्य भाषा से पृथक् है। उपयुक्त भाषा में सुन्दर शब्दावली के साथ प्रवाहपूर्णता, रूपकों का सीमित प्रयोग, उपमाओं एवं अत्युक्तियों का संतुलित प्रयोग होना अति आवश्यक है। इस प्रकार भाषा की सार्थकता काव्य में औदात्य उत्पन्न करने में है और जो भाषा इस प्रयोजन में सहायक है, वही आदर्श भाषा कही जा सकती है।

5. लोंजाइनस के अनुसार औदात्य का पाँचवा स्रोत गरिमामय रचना विधान है जिसमें प्रथम स्थान सामंजस्य को दिया जा सकता है। शब्दों में व्यवस्थित अनुक्रम से काव्य की प्रकृति व स्वरूप में सामंजस्य आता है। वस्तुतः भाषा में सामंजस्य स्थापना हेतु ही काव्य में छन्द विधान का आविष्कार हुआ है। लोंजाइनस ने काव्य की रचना का विधान पर विशेष जोर देते हुए कहा है कि उदात्त विचारों, शब्दों, कार्यों एवं सौन्दर्य के अनेक रूपों के समुच्चय का सामंजस्य होना अतीव आवश्यक है।

सारत: लोंजाइनस के काव्यात्मक चिन्तन की यही खासियत है कि वे अनेक असम्बद्ध वस्तुओं की भावभूमि पहचानते हैं, काव्य सृजन के निहितार्थ प्रक्रियागत सम्बन्ध समझते हैं तथा संवादी-विवादी स्तरों की तरह विरूद्धों की एकता में भी औदात्य और उत्कर्ष देखते हैं। इतना ही नहीं, वे काव्य में औदात्य के स्रोतों में भी 'सहजात' और 'कला की उपज' के आधार पर क्रम निर्धारण करते हैं। उन स्रोतों में महत्त्व क्रम के साथ-साथ भीतरी तर्क भी मौजूद है। महान् आचरण और विचार से अभिव्यक्ति की सहज क्षमता आती है और इस क्षमता से वह संयम आता है जो उदात्त के सबसे बड़े साधक 'उचित प्रसंग में सच्चे भाव' का स्रोत है। इस प्रकार लोंजाइनस बहुत सहजता के साथ यह स्वीकार करते हैं कि उदात्त के पाँचों स्रोत वस्तुतः अलग-अलग नहीं हैं, अपितु संश्लिष्ट रूप में उदात्त के साधक होते हैं। मानव शरीर की तरह इनमें भी एक अंग का दूसरे से स्व तंत्र कोई निजी मूल्य नहीं है। यही कारण है कि एक कालखण्ड में भव्यता अनेक तत्त्वों के सहयोग से उत्पन्न होती है।

2.2.3.4. उदात्त के बाधक तत्त्व

सामान्यतः उदात्त के बाधक तत्त्वों में भाषा की अव्यवस्था, प्रवाहशून्यता, विषय से अधिक लय को प्रमुखता, उक्ति में अस्पष्टता, आडम्बरपूर्ण शैली, अनुचित विचार, अभिव्यक्ति की क्षुद्रता, ग्राम्य पदों का प्रयोग, कर्ण कटुभाषा आदि को लिया जा सकता है। इस सन्दर्भ में कला में दो प्रकार के दोष हो सकते हैं – पहला, रचना के नियम सम्बन्धी तथा दूसरा, विषय वस्तु सम्बन्धी। लोंजाइनस ने इन दोनों पर गहराई से विचार किया है। उनके

अनुसार "कला में हम निर्दोषता की प्रशंसा करते हैं तो प्रकृति में भव्यता की" । मनुष्य को वाक्शक्ति का वरदान प्रकृति से प्राप्त हुआ है। दोनों की 'सहकारिता' से पूर्णता आती है। ध्यातव्य है कि औदात्य विवेचन के क्रम में स्वभावत: वे निर्दोषता और औदात्य को पर्यायवाची भी नहीं मानते हैं । चूँकि कला इसमें प्राथमिक नहीं है, इसलिए वह प्रकृति की सहायक होकर ही उदात्त बनती है। इसलिए रचना के नियम सम्बन्धी दोष 'औदात्य और उत्कृष्टता के एक ही स्पर्श' से बारम्बार धुल जाते हैं, लेकिन प्रकृति सम्बन्धी दोष का निस्तारण नहीं होता जिसे लोंजाइनस ने 'आडम्बर' की संज्ञा प्रदान की है।

वस्तुतः लोंजाइनस कला में दोष और आडम्बर के अलग-अलग सामाजिक आधार को पहचानते हैं। वे निर्दोष कला के रीतिवादी आदर्श की बजाय उदात्त कला का लोकतांत्रिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार उनके लिए उदात्त एक नैतिक प्रेरणा और समानान्तर विवेक है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि कला नियम के दोष असावधानी के द्योतक हैं, इसलिए वे उदात्त को बाधित नहीं करते बल्कि वे स्वयं उससे दब जाते हैं। लेकिन 'आडम्बर' का दोष तुच्छता का परिचायक है जो 'निर्दोषता' की आड़ में त्याज्य वस्तुओं के मोह को सांस्कृतिक मुखौटा प्रदान करता है, इसलिए वह उदात्त का सबसे बड़ा शत्रु है। कला में यह आडम्बर की संस्कृति तीन रूपों में प्रतिबिम्बित होती है – पहला शब्दाडम्बर, दूसरा बचकानापन और तीसरा भावाडम्बर। ये तीनों दोष भाव और कला में अलगाव से आते हैं और उनका प्रभाव भी तुच्छतापूर्ण होता है। इस प्रकार सैद्धान्तिक मान्यताओं की आधारभूमि पर लोंजाइनस ने उदात्त के बाधक तत्त्वों की वास्तविक तस्वीर अंकित कर दी है।

2.2.4. 'उदात्त सिद्धान्त' की उपादेयता

विदित है कि यूनानी साहित्य में अरस्तू ने कला को अनुकृति मानते हुए कवि के निजी व्यक्तित्व की उपेक्षा कर दी थी, किन्तु लोंजाइनस ने कवि के व्यक्तित्व को कविता की भव्यता से सम्बद्ध कर काव्य चिन्तन की परम्परा और दिशा ही बदल दी है।

अनुकृति सिद्धान्त में कला का सौन्दर्य प्रकृति के सौन्दर्य का अनुकरण मात्र बताकर कलाकार के योगदान को कम करके आँका गया है, लेकिन लोंजाइनस ने कवि के व्यक्तित्व को वरीयता देते हुए अपनी स्थापनाओं में उदात्त काव्य को उदात्त व्यक्तित्व से सम्बद्ध कर अभूतपूर्व चिन्तन का परिचय दिया है। यही कारण है कि कालान्तर में काण्ट, हीगेल, कैरिट जैसे विचारकों ने अरस्तू के अनुकृति सिद्धान्त की अपेक्षा लोंजाइनस के उदात्त सिद्धान्त को अधिक महत्त्व प्रदान किया है।

लोंजाइनस ने उदात्त का व्यापक विवेचन करते हुए उसमें विचार तत्त्व, भाव तत्त्व, शैली तत्त्व, अलंकार, भाषा तत्त्व सबको समाविष्ट कर दिया है। भावावेगों को महत्त्व देते हुए उन्होंने अलंकारों, गुण-दोषों का भी व्यापक विवेचन किया है। भावावेगों के उद्वेलन एवं उससे उत्पन्न आनन्द की बात को स्वीकार करते हुए नि:संदेह लोंजाइनस ने एक तरह से भारतीय काव्यशास्त्र के रस सिद्धान्त की धारणाओं को ही संपुष्ट किया है।

2.2.4.1. उदात्त और भारतीय काव्य चिन्तन

भारतीय काव्य चिन्तन में उदात्त की अवधारणा का उल्लेख मिलता है। संस्कृत में उदात्त एक अलंकार है जो वर्ण्य वस्तु की सम्पन्नता या महिमा की अभिव्यंजना करता है। इस आलोक में लोंजाइनस के मतानुसार उदात्त अलंकार मात्र नहीं है। उनके लिए वह अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण गुण है। फिर भी लोंजाइनस के द्वारा शब्दालंकार और विचारालंकार का जो वर्गीकरण है, वह भारतीय काव्यशास्त्रीय शब्दालंकार और अर्थालंकार से पृथक् नहीं है। उदाहरण के तौर पर आनन्दवर्द्धन ने 'ध्वन्यालोक' में अलंकार को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'कवि रस से ऐसा बंधा हो कि अलंकार खुद बन जाय, अलग से कोशिश न की जाय कि वह अलंकार है। इसी सन्दर्भ में लोंजाइनस इस मत का प्रतिपादन करते हैं कि "अलंकार सर्वथा प्रभावशाली तब होता है जब इस बात पर ध्यान ही न जाए कि वह अलंकार है"। काव्य के उदात्त स्वरूप का विवेचन करते हुए लोंजाइनस ने लिखा है कि "वास्तव में महान् रचना वही है जो बार-बार कसौटी पर कसी जाने पर भी सदैव खरी उतरे और जिसकी स्मृति इतनी प्रबल हो कि मिटाए न मिटे"। इस सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा प्रतिपादित 'लोकहृदय में लीन होने' की संकल्पना का भी काव्य प्रयोजन से गहरा सरोकार है। अस्तु, कालातीतता, अलंकार, भाव और लोकव्यापकता आदि अनेक सन्दर्भों में भारतीय काव्य चिन्तन और लोंजाइनस में बहुत समानता है।

2.2.4.2. उदात्त सिद्धान्त का अवदान

पाश्चात्य काव्यशास्त्र की चिन्तन परम्परा में लोंजाइनस का प्रादुर्भाव एक बहुत बड़ी घटना है। उनका पूरा चिन्तन काव्य के उदात्त का वह परिधान है जो लोकमंगल के निहितार्थ भावों, अनुभावों और सहानुभूति के उनके करघे पर बुना गया है। लोंजाइनस की दृष्टि तब तक प्रासंगिक बनी रहेगी जब तक कि हम काव्य चिन्तन में संकीर्णताओं से मुक्त नहीं हो पाते। वस्तुतः लोंजाइनस ने रीतिवादी आलोचना दृष्टि का व्यवस्थित ढंग से विरोध करते हुए लोकतांत्रिक दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा की है। साथ ही, कला के रूपगत पक्षों की आलोचना के क्रम में उन्होंने प्रकृति पर ध्यान केन्द्रित करके स्वच्छंदतावाद के व्यापक तत्त्वों का भी सार्थक उपयोग किया है।

काव्य में उदात्त को सबसे बड़ा मूल्य स्वीकार करते हुए लोंजाइनस ने उसे अनेक बातों के सामंजस्य और सन्तुलन का परिणाम स्वीकार किया है। इस आलोक में यथार्थवादी दृष्टि और द्वन्द्ववादी पद्धति की ठोस आधारशिला स्थापित करना उनका सबसे बड़ा साहित्यिक अवदान है। उन्होंने यथार्थवादी दृष्टि से न केवल सामाजिक जीवन और कला के सम्बन्धों का निरूपण किया है, अपितु मनुष्य की जातीय संस्कृति से अभिव्यक्ति का सम्बन्ध भी पहचानते हैं। समाज और कला के सम्बन्धों की समीक्षा करते हुए उन्होंने व्यापक समाजशास्त्रीय दृष्टि अपनायी है। उनके अनुसार कला के साधन तभी सार्थक होते हें जब वे एक ओर गरिमापूर्ण आत्मा से, दूसरी ओर जीवन के यथार्थ से सम्बद्ध हो। उनकी दृष्टि में यथार्थ का अभिप्राय ब्यौरों का संग्रह नहीं, अपितु मानवीय विवेक से यथार्थ की तर्कसंगत पहचान है, यथार्थ के उदात्त और जीवन्त अंशों की पहचान है। इस चयन दृष्टि के आधार पर ही संवेग-कल्पना-तर्क जैसी आन्तरिक शक्तियाँ और अलंकार-बिम्ब-भाषा जैसी कलात्मक युक्तियाँ उचित अनुपात में उपस्थित होकर उदात्त की रचना करती हैं। लोंजाइनस की आलोचना दृष्टि व उसकी गम्भीरता

को देखते हुए प्रो॰ निर्मला जैन ने उन्हें 'व्यावहारिक आलोचना' के लिए स्थायी महत्त्व के औजार प्रदान करने का श्रेय दिया है। होमर के विवेचन में उन्होंने 'इलियट' और 'ओदेशी' की जो तुलना प्रस्तुत की है, वह तुलनात्मक आलोचना का अविस्मरणीय और अभूतपूर्व उदाहरण है।

2.2.5. सारांश

लोंजाइनस विचार, विरोध और काव्य के उदात्त को लेकर अनेक अर्थ में सदियों की दीवारों के पार हमारे समय, समाज और उसकी आवश्यक कार्यवाही का जरूरी और प्रासंगिक हिस्सा हैं। वे पाश्चात्य काव्य परम्परा में ऐसे पहले विचारक हैं जो काव्य में उदात्त तत्त्वों के निहितार्थ मनुष्य को तमाम संज्ञाओं से मुक्त करते हुए कला को कला बन कर डटे रहने की माँग करते हैं, प्रेरणा देते हैं। वे समकालीन समय के खतरनाक विवादों को भी सुलझाने में हमारी मदद करते हैं। अत: जब तक समाज में भेदभाव है, मनुष्य व कला विरोधी ताकते हैं, आडम्बर हैं, लोंजाइनस की प्रासंगिकता और जिरह जारी रहेगी। उनका काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन वस्तुतः युगबोध और आधुनिकता के सन्दर्भ में किया गया है। चूँकि, मूल्यांकन में कुछ नया सोचने और युगीन सन्दर्भों में कृति की व्याख्या का भाव अधिक रहता है। इसलिए इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि अतीत से अपने को पूर्णतया मुक्त कर लेने का भाव किसी मूल्यांकन का ठोस एवं विश्वसनीय आधार हो सकता है। लोंजाइनस के काव्यशास्त्रीय चिन्तन के सन्दर्भ में हमारा प्रयास वैसी ही एक दरकार है।

2.2.6. शब्दावली

उदात्त	:	उत्कृष्ट
मिथ्या	:	झूठा
आडम्बर	:	दिखावा
प्रकृति	:	स्वभाव
समुच्चय	:	समूह

2.2.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची

1. जैन, निर्मला, काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. गुप्त, शान्ति स्वरूप, पाश्चात्य आलोचना के काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. श्रीवास्तव, अर्चना, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. डॉ॰ नगेन्द्र व जैन, नेमिचन्द्र, काव्य में उदात्त तत्त्व (अनु.), राजपाल एंड संस, नई दिल्ली.
6. जैन, डॉ॰ निर्मला, उदात्त के विषय में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. सिंह, विजय बहादुर, पाश्चात्य काव्यशासृत्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
8. भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.

2.2.8. सम्बन्धित प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. काव्य में उदात्त तत्त्व से लोंजाइनस क्या अभिप्राय है ?
2. औदात्य के स्रोतों का उल्लेख कीजिए।
3. गरिमामय रचना विधान को लेकर लोंजाइनस की दृष्टि पर प्रकाश डालिए।
4. उदात्त के बाधक तत्त्वों की व्याख्या कीजिए।
5. लोंजाइनस के अवदान की चर्चा कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लोंजाइनस के उदात्त की संश्लिष्ट अवधारणा संवेग, कल्पना, तर्क और यथार्थ के परस्पर सम्बन्ध से निर्मित होती है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. उदात्त के विषय में लोंजाइनस के विचारों की समीक्षा कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. लोंजाइनस के 'पेरिइप्सुस' का पहला अंग्रेजी अनुवाद किस वर्ष हुआ ?

   (a) 1554

   (b) 1555

   (c) 1661

   (d) 1662

2. लोंजाइनस के चिन्तन का स्वरूप है –

   (a) विद्रोही

   (b) यथार्थवादी

   (c) मानवतावादी

   (d) उपर्युक्त सभी

3. लोंजाइनस ने उदात्त के कुल कितने स्रोतों का उल्लेख किया है ?

   (a) दो

   (b) चार

   (c) पाँच

   (d) छह

4. "महान् प्रतिभा निर्दोषता से दूर होती है"। यह कथन किसका है ?
   (a) प्लेटो
   (b) अरस्तू
   (c) लोंजाइनस
   (d) इनमें से कोई नहीं

5. लोंजाइनस के अनुसार उदात्त के बाधक तत्त्व हैं –
   (a) रचना के नियम सम्बन्धी
   (b) विषय वस्तु सम्बन्धी
   (c) उपर्युक्त दोनों
   (d) इनमें से कोई नहीं

उपयोगी वेबसाइट्स :

01. http://epgp.inflibnet.ac.in/ahl.php?csrno=18
02. http://www.hindisamay.com/
03. http://hindinest.com/
04. http://www.dli.ernet.in/
05. http://www.archive.org

❖❖❖